

परदेश में आयुर्वेद का परचम

आधुनिक जीवन में प्राचीन ज्ञान की पद्धति आयुर्वेद...इक्कीसवीं सदी में बढ़ता इसका प्रसार और



गीताजलि सक्सेना

प्रचलन इसके महत्व को भलीभांति दर्शाता है। सच तो ये ही है कि कोरोना काल में भी आयुर्वेदिक औषधियों के इस्तेमाल के फायदों का बाजार गरम रहा है, किन्तु एक सच यह भी है कि अभी कोई भी वैज्ञानिक अनुसंधानों के पास तत्वों के अभाव के कारण

कोरोना के इलाज में सकारात्मक भूमिका निभाने में सफलता हासिल नहीं कर पाए। दरअसल, आज कोरोना का इलाज करना सभी पद्धतियों के लिए बड़ी चुनौती बन गई है, जो नये शोध करने की ओर इशारा करता है। इसी दौड़ में आयुर्वेद पद्धति भी वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर आधुनिक संकल्पना को अपनाते हुए सभी के साथ कदमताल करते हुए बढ़ रही है। बशर्ते कि इन क्षेत्रों से जुड़े शोधकर्ताओं को पूर्ण स्वतंत्रता मिले। देश हितों के लिए किए जाने वाले प्रयासों, उससे जुड़े संगठनों और उनकी योजनाओं पर राजनीति करना देशद्रोही तेवर अपनाता होता है। ऐसे में यदि यह कहें कि नेताओं को अहम की राजनीति से उठ कर देशहित प्रथम को अपने आचरणों में शामिल करना चाहिए, तो शायद गलत नहीं होगा। ऐसे राष्ट्र की तस्वीर दुनियाभर में प्रवासी भारतीयों को भी उनकी पहचान गौरवान्वित करने में मदद करता है।

'आयुर्वेद' जीवन की अद्भुत प्राकृतिक चिकित्सा की भारतीय प्रणाली है, जो प्राचीन काल से हमारे जीवन का आधार रही है। पुरातन समय में भारत में आयुर्वेद की शिक्षा मौखिक रूप से गुरु - शिष्य परम्परा के अन्तर्गत ऋषियों द्वारा दी जाती थी। माना जाता है कि लगभग पांच हजार साल पहले इस ज्ञान को ग्रंथों में लिखित रूप दिया गया था। इन ग्रंथों में सृष्टि में व्याप्त पांच महाभूतों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों का मनुष्यों के ऊपर होने वाले प्रभावों तथा स्वस्थ एवं सुखी जीवन जीने के लिए इन तत्वों को संतुलित रखने की महत्ता की प्रमुखता को दर्शाता है।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, यह देवताओं की चिकित्सा पद्धति है ... हालांकि इसके ज्ञान को मानव कल्याण के लिए वैद्य और आचार्यों ने अपनी प्रतिभा और अनुभव से प्राप्त किया करते थे। अनेकों जड़ी बूटियों के माध्यम से संक्रामक रोगों का इलाज किया जाता रहा है। तब से लेकर आज भी हम उन संजीवनी जीवन रक्षक जड़ी बूटियों के नामों से परिचित हैं और उनके गुणकारी लाभ को स्वीकार करते हुए इस्तेमाल कर रहे हैं।

मानव इतिहास के शुरुआती दौर से ही यह हमेशा से सब के रोजमर्रा के जीवन में शामिल रही है। ग्रंथों से निकल कर इनकी जगह दादी नानी के पिटारे से निकले घरेलू नुस्खों के रूप में भी सदियों से प्रचलित है। हर्बल औषधियां भारतीयों के हर रसोई घर के शेल्फ का हिस्सा रही है, और इनका प्रचलन भी खूब और खूब होता रहा है। सदियों से इन औषधियों का

आयुर्वेद / आधुनिक पद्धति



अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बढ़ती मांग को देखते हुए औषधियों की उत्पादन की क्षमता को गुणवत्तापूर्ण सहित बढ़ाना बेहद जरूरी होगा। आयुर्वेद के विज्ञान और अभ्यास को विश्व स्वास्थ्य संगठन से भी मान्यता प्राप्त है और हर्बल मेडिसिन के बढ़ते दायरे को स्वीकार भी किया है।

इस्तेमाल शरीर और मन के उपचार के लिए किया जाता रहा है। यह एक वास्तविक, समग्र और अभिन्न चिकित्सा प्रणाली है, जो रोगों के स्थायी निदान पर जोर देता है। जीवन के सभी पहलुओं में आयुर्वेद उपचार प्रदान करते हैं, जो प्रकृति के साथ जीवन के सामंजस्य के महत्व पर जोर देता है। आयुर्वेद लक्षणों के बजाय रोग के कारणों का इलाज करता है और बिना किसी दुष्प्रभाव के शरीर की प्रतिरक्षा में सुधार करता है।

आयुर्वेद व एलोपैथी दोनों प्रणालियों के बीच कोई आपसी प्रतिस्पर्धा या मतभेद नहीं है, बल्कि अनेकों ऐसे औषधीय पौधे हैं, जिन्हें वैज्ञानिक शोधकर्ताओं ने कई रोगों के इलाज के लिए व्यवहार किया है और इनके महत्व को बताते हुए रेखांकित भी किया है। नयी दवाओं के विकास में औषधीय पौधों की अहम भूमिका की स्वीकृति प्रदान है। दिलचस्प बात यह है कि देश में 70 प्रतिशत आधुनिक दवाएं प्राकृतिक उत्पादों से बनाई जाती हैं। यहां भी दोनों पद्धतियों के बीच मनमुटाव व फूट हालने का काम भी देश भक्षकों का ही रहता है, जिसका नुकसान इन क्षेत्रों में समय की मांग के साथ हो रहे शोध, अध्ययनों और उनकी प्राथमिकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। प्राचीन ज्ञान का आधुनिक मंत्र ... आयुर्वेद में छिपा है ... अच्छी

सेहत का खजाना। भारत के इतिहास की गौरवशाली पद्धति आयुर्वेद और योग का दुनियाभर में फैलता प्रसार एवं प्रभुत्व, निःसंदेह हर प्रवासी भारतीय को गौरवान्वित और एक सुखद अनुभूति प्रदान करता है।

विदेशों में आयुर्वेद की बढ़ती लोकप्रियता, उसकी खूबसूरती इस पद्धति के रोग निवारक प्रकृति और दुष्प्रभावों की कमी के कारण, आज दुनिया भर में इसका डंका बज रहा है। आज अन्तरराष्ट्रीय बाजार में पारंपरिक दवाएं या आयुर्वेद पद्धति ने अपनी पहचान बनाने में तेजी से पैर जमाने में सफलता हासिल की है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वर्तमान समय में लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार लाने में हजारों साल पुरानी पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गौरतलब है कि भारत ग्लोबल बाजार में जड़ी बूटियों के औषधीय का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। इसीलिए इसे 'बोटेनिकल गार्डन ऑफ द वर्ल्ड' कहा जाता है। पूरी दुनिया में बड़ी संख्या में बढ़ता हर्बल दवाइयों के कारोबार में अन्य देशों की तुलना में भारत को अपने योगदान में तेजी लाने की बेहद आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों से लबालब भरा अपने देश को बस जरूरत है ... पारंपरिक आयुर्वेदिक दवाओं और इस पद्धति को योजनाबद्ध तरीके से विदेशी व्यवस्था में व्यापक स्तर पर स्वीकृति हासिल करने के लिए वैज्ञानिक मान्य तरीकों को रेखांकित करना ही होगा। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बढ़ती मांग को देखते हुए औषधियों की उत्पादन की क्षमता को गुणवत्तापूर्ण सहित बढ़ाना बेहद जरूरी होगा।

आयुर्वेद के विज्ञान और अभ्यास को विश्व स्वास्थ्य संगठन से भी मान्यता प्राप्त है और हर्बल मेडिसिन के बढ़ते दायरे को स्वीकार भी किया है। इसका लाभ उठाने की दिशा में विदेशी बाजारों की आर्थिक मंडियों की नब्ज को समझते हुए और मार्केट में अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए हर संभव कोशिशों में तेजी लाने के प्रयत्न जारी रखने होंगे। भारत के लिए इस क्षेत्र में आर्थिक दृष्टि से अपार संभावनाएं मौजूद हैं। परदेश में आयुर्वेद पैकेजों को उपलब्ध कराने के लिए मेडिकल टूरिज्म को बढ़ाने की दृष्टि से भी देखा जा सकता है।

आयुर्वेद को बढ़ावा देने के लिए मिशन के तहत भारतीय दूतावास संयुक्त अरब अमीरत की राजधानी आबू धाबी में स्थित 'एडम एन्ड इव' आयुर्वेद सेन्टर बड़ी सक्रियता से सफलतापूर्वक काम कर रहा है। यूएई सरकार ने इस सेन्टर को अपनी स्वीकृति प्राप्त की है। कोविड के सख्त निर्देशों के अन्दर आधुनिक सुविधाओं के वातावरण में आयुर्वेद की प्रामाणिकता को खोए बिना अनुभवी और लाइसेंस प्राप्त डॉक्टरों की देखरेख में लाइसेंस प्राप्त तकनीशियनों द्वारा सभी प्रकार के रोगों का उपचार पारंपरिक पद्धति और हर्बल औषधीय तेल चिकित्सा और पंचकर्म चिकित्सा सम्पन्न हो रहा है। और अंत में यदि यह कहें कि आयुर्वेद न केवल रोकथाम पर बहुत महत्व देता है, बल्कि लोगों के जीवन को संतुलित करने के लिए उचित आहार और जीवन शैली में संशोधन के माध्यम से स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करता है।